आज की मुरली का सार -- आज बाबा ने इस अनादि बेहद के ड्रामा में आत्माओं का पार्ट के बारे में बताया हैं.

- ड्रामा के शुरू में आत्माये बहुत कम होती हैं. हम जानते हे, सतयुग के शुरु में सिर्फ **9** लाख आत्माये होती हैं. जो सतयुग के अन्त में बढ़कर **2** करोड जितनी हो जाती हैं. त्रेता के अन्त तक आत्माये **33** करोड हो जाती हैं. इसलिए शास्त्र में लिखा हे, पृथ्वी पर **33** करोड दैवी-देवताये थे.

- इस ड्रामा में जो आत्मा ऊपर से नीचे एक बार पार्ट बजाने आ जाती हे, वह आत्मा फिरसे वापस अपने घर (परमधाम) ड्रामा के बीच में नहीं जा सकती. जब तक ड्रामा का साईकल पूरा न हो, बाप आकर सभी आत्माओं को नंबरवार पावन बनाकर साथ ले जाते हे, तब तक कोई भी आत्मा बीच में से वापस घर नहीं जा सकती.

- इस बेहद के ड्रामा में सभी आत्माओं को पार्ट बजाना ही हे, किसी का एक-दो जनम का पार्ट हे, तो हम बच्चों का पूरा **84** जन्मो का पार्ट हे. लेकिन सब आत्माओं को (स्वयं बाबा को भी पार्ट बजाना हैं) इस बेहद के ड्रामा में पार्ट तो जरूर बजाना ही हैं, किसी को इसमें से मुक्ति या मोक्ष नहीं मिल सकता.

- इस बेहद के ड्रामा में आत्माओं की वृध्धी, शुरू से अन्त तक होती ही रहती हैं. इसलिए हम देखते हे, विश्व की अलग-अलग गव्रमेन्ट्स जनसंख्या कम करने की प्रयत्न करती हे, इसके अलावा विश्व में इतनी सारी वोर (विश्वयुद्ध **1** और **2)** होती हे या प्राकृतिक आपदाये आती हैं फिर भी विश्व की जनसंख्या तो बढ़ती ही जाती हैं. इसका गुह्य रहस्य बाबा ने आज मुरली में समझाया हैं, कि जनसंख्या तो बढ़ेगी ही जब तक परमधाम से सब आत्माये अपना पार्ट बजाने नीचे न आ जाये. जब परमधाम से सब आत्माये आ जाती हे बाद में बाबा ही सब आत्माओं को वापस घर ले जाते हैं.

- आत्माओं का झाड़ कभी सुखता नहीं हैं. परमधाम जैसे ही आत्माओं से खाली हो जाता हे, तुरंत ही नीचे से आत्माओं की वापस जरनी, परमधाम की और चालू हो जाती हे और साथ में सतयुग में पार्ट बजाने वाली आत्माये नीचे आती जायेगी. दोनों स्थान, परमधाम और विश्व का रंगमंच, आत्माओं से कमप्लेट सुख नहीं जाता हैं. इसलिए बाबा कहते हे, ड्रामा अनादि हे चलता ही रहता हे, रुकता नहीं.

ॐ शांति.